सावित्री

(... का संक्षिप्तांश)

व्याख्याकार

पण्डितराज डा. श्री गोपाल शास्त्री
"दर्शन केशरी"

प्रकाशक

शास्त्रिमण्डलम् तथा गोपालकृष्ण आश्रम

डी. ५६/३१ केशरीकुञ्ज

सिगरा, वाराणसी

दूरभाष : ६५९९५

प्रथमं संस्करणम्

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सं० २०४०

मूल्यम् २/- रूप्यकद्वयम्

मुद्रक—

मधुसूदन प्रेस

भदैनी, वाराणसी

दूरभाष : ५६३६२

भारत सावित्री

(महाभारत का संक्षिप्तांश)

[—]
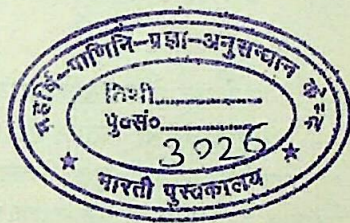
व्याख्याकार

पण्डितराज डा. श्री गोपाल शास्त्री

"दर्शन केशरी"

॥ श्रीराम: शरणं मम ॥

'विना भारतसावित्रीं भारतं भारतं नहि'

—सन्त रामशरणदासः

'नमोऽस्तु ते व्यासविशालबुद्धे, फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र ।
येन त्वया भारततैलपूर्णः, प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः ॥'

भारत सावित्रीपर कुछ लिखना सूर्यको दीपक दिखाना हैं। तथापि 'गुरोराज्ञा गरीयसी'। यह महाभारतका नवनीत स्वरूप है। इसमें जो है, वही सब जगत्‌में है। इस विषयमें स्वयं कृष्ण द्वैपायन भगवान् वेदव्यासजी ही कहते हैं—'यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।' रामायण और महाभारत वास्वतमें सूर्य और चन्द्रके रूपमें भारतके दो नेत्र हैं जिनमें सूर्य और चन्द्र वंशका विस्तृत वर्णन है। इनको जाने बिना भारतीय संस्कृतिको जानना असम्भव है—

'रामायणं रविर्ज्ञेयो भारतं चन्द्र उच्यते।
उभे हि भारते नेत्रे याभ्यां पश्यन्ति पण्डिताः ॥

कविकुल चूडामणि गोस्वामी तुलसीदासजीने ठीक ही कहा है कि 'रामायण सिख अनुहरत, जग भयो भारत नीक। तुलसी शठकी को सुने, कलि कुचालपर प्रीत ॥" अर्थात् रामायण-महाभारतकी शिक्षाके होते हुए भी घर-घरमें महाभारत मचा हुआ है। महाभारतमें क्या नहीं है ? भगवान् वासुदेवका माहात्म्य, पाण्डवोंकी भक्ति, सत्यता, कुन्तीका धैर्य, गान्धारीकी धर्मशीलना आदिके रूपमें श्री वेदव्यासजी ने वेदार्थको ही मूर्तरूप दिया है—

'भारत व्यपदेशेन ह्याम्नायार्थस्तु दर्शितः।
दुर्वृत्तं धार्तराष्ट्राणां पाण्डवानां च सत्यताम् ॥
क्षतुः प्रज्ञां धृति कुन्त्या गान्धार्या धर्मशीलताम्।
माहात्म्यं वासुदेवस्य सर्वं द्वैपायनोऽब्रवीत् ॥'

महामहोपाध्याय पण्डितराज
डॉ० श्री गोपालशास्त्री 'दर्शन केशरी' जी
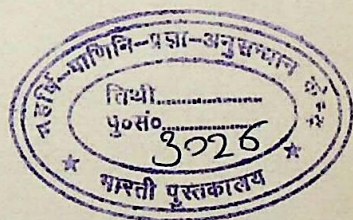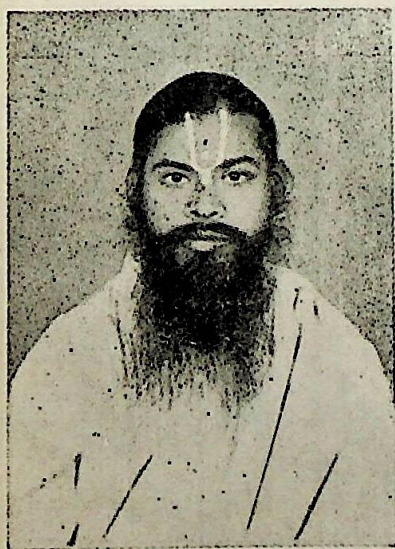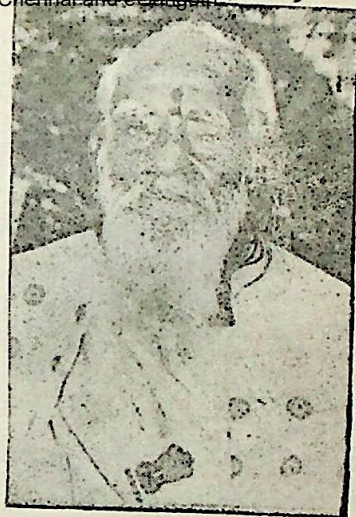
सार्वभौम भागवतरत्न
सन्त श्रीरामशरणदास जी महाराज

यों तो लक्षश्लोकात्मक महाभारत नामसे ही परिज्ञात, विशालकाय ग्रन्थ है, जैसी कि व्याख्या की गई है—

'लक्षश्लोकात्मकत्वेन महनीय शरीरतः ।
महत्वाद् भारतत्वाच्च - महाभारतमुच्यते ॥

अतः प्रारम्भमें इसके परिचय-पिपासुओंके लिए मात्र सहस्रांश-संक्षिप्त रूपमें भारत-सावित्री' प्रस्तुत है। इस छोटेसे ग्रन्थमें भी असंख्य-रत्न भरे पड़े हैं लेकिन जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानो पैठ ॥' यदि इसका समुचित समादर हुआ तो लगभग पञ्च सहस्रात्मक 'संक्षिप्त महाभारत' भी शीघ्र ही आपकी सेवामें प्रस्तुत किया जायेगा। अन्तमें इसको प्रस्तुत करनेमें मधुसूदन प्रेस आदि सभी प्रकारके सहयोगदाताओंको धन्यवाद व महाभारत के ही सार-श्लोकको देकर अपनी लेखनीको विराम देता हूँ—

'यत्र धर्मो द्युतिः कान्तिर्यत्र ह्रीः श्रीस्तथा मतिः ।
यतो धर्मस्ततः कृष्णो यतः कृष्णस्ततो जयः ॥

(म० भा० भी० प० २३।२८)

—राम मन्दिर, खोजवाँ, वाराणसी

शास्त्रिवर्याणाम् आशीर्वचनम्

वाराणस्यां स्थिता ये मे, परिवाराः सुखावहाः ।
मोदन्तां मिलिताः शश्वत्, सर्वेहि पुत्र पौत्रिणः ॥

॥ श्रीः ॥

"अथ किं नाम महाभारतम् अथ कथं महाभारतम्"

भरता भरतवंशीया राजानो योद्धारोऽस्य संग्रामस्य, स संग्रामो भारतः (संग्रामे प्रयोजनयोद्धृभ्यः । इति सूत्रसिद्धमिदं रूपम्) तमधिकृत्य कृतं काव्यं भारतमेव महाभारतम् । यथोच्यते ।

कृतं मयेदं भगवन् काव्यं परमपूजितम् ।

त्वया च काव्यमित्युक्तं तस्मात्काव्यं भविष्यति । इति महाभारते आदिपर्वणि ।

इदमितिहासोऽपि । इतिहासोत्तमादस्माज्जायन्ते कविबुद्धयः । इति च तत्रैव ।

एवं वास्तविकस्य सतत्वस्य सत्वेऽपि ।

भान्त्यस्यात्सर्ववेदास्ते रतिर्यत्र विदुष्मताम् ।

तरणं येन पापेभ्यस्तस्माद्भारतमुच्यते । इति प्रत्यक्षरानुसारं व्याख्यास्य ।

तथापि सर्ववेदानां भानस्य सङ्गतिः परिदृश्यते । तद्यथा—

चत्वारश्चैकतो वेदा भारतश्चैतदेकतः ।

पुरा किल सुरैः सर्वैः साम्यायेदं तुलाधृतम् ।

चतुर्भ्यः सरहस्येभ्यो वेदेभ्योऽभ्यधिकं यदा ।

तदाप्रभृति लोकेऽस्मिन् प्रथाभूदियमुत्तमा ।

महत्वाद् भारवत्वाच्च महाभारवदेव तु ।
लक्षश्लोकात्मकत्वेन शरीरे महदेव यत्
प्रतिपाद्यार्थभाराच्च महाभारवदेव तु ।
महान्तो भरता यत्र संग्रामे योद्धृकास्ततः
महत्त्वाद् भारतत्वाच्च महाभारतमुच्यते ॥

एतस्मादस्माद् दर्शनकेशरिणां म० म० डा० पं० गोपालशास्त्रि महाभागानां दार्शनिकी लेखनी स्वावयवानां न्यायवैशेषिकसांख्ययोगपूर्वोत्तरमीमांसानां रहस्यं दर्शयन्तीं लोकेभ्यः स्पृश्यन्तीं भारतसावित्रीं यां प्रासोष्ट सेयं यत्र तत्र सर्वत्रात्र विद्योतमाना सुराजतां तरामित्यस्माकं महती भारती भातु समन्नतः। जागतु तमां लोकोऽस्यै स्पृश्यालुरस्त्वित्याशास्महे महः।

आचार्य मधुसूदन शास्त्री
भदैनी, वाराणसी

॥ श्रीकृष्णः शरणं ममः ॥

परमादरणीय श्री दर्शन केशरीजी द्वारा संकलित भारत साविश्री नामक कृतिको मुद्रित करते हुये प्रसन्नता हो रही है। श्री गोपाल शास्त्री जी संस्कृत जगत्के मान्य विद्वान् हैं। यद्यपि महाभारत ग्रन्थ भौतिक जगत्के लोगों के मध्य बड़ा ही विवादास्पद है परन्तु शास्त्रीजीने अपनी सहज चिन्तनरूपी मथनीसे उसके नवनीतको पुस्तिकाकार रूप दिया है, जिसका पठन-पाठन मानव मात्रके लिए कल्याण कारक है।

भारत सावित्री नामक इस संकलनके १०० श्लोक महाभारतकी प्रासंगिकता के महत्वपूर्ण आख्यानोंको मूर्तरूप देनेमें समर्थ हैं, इस संकलनके क्रमका समायोजन भी अत्यन्त विनोदपूर्ण है तथा मानव जीवनके दर्शनको महाभारतके परिप्रेक्षमें उद्घाटित करते हैं। सम्भवतः इसी प्रेरणासे अन्तिम दश श्लोकोंमें शास्त्रीजीने स्वतः भारत सावित्रीका नित्य पाठका विधान दिया है।

माँ शारदाकी असीम कृपासे भारत सावित्रीको आपतक लाकर भारतीय वाङ्मयमें एक और कड़ी जोड़ सकनेसे मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। मां शारदसे प्रार्थना करता हूँ कि ज्ञानके अभावमें भटकते मानवको नित नया प्रकाश दे।

अरुणोदय

॥ श्रीकृष्णः शरणं मम ॥

"दो शब्द"

भारत सावित्री ग्रन्थ-रत्न आध्यात्म मार्ग-जिज्ञासुओंके लिए एक ऐसा रसायन है जिसमें संवाद रूपमें बादरायण भगवान्के महाभारतके वास्तविक स्वरूपको इतने सूक्ष्म नवनीतरूपमें विद्या निधि श्री सिद्धेश्वर शास्त्रीने भर दिया है। इसके अध्ययनसे महाभारतको न पढ़नेवाले जगत्के व्यस्त पुरुष भी महाभारतके मूलतत्वोके ज्ञाता बन सकते हैं।

इस भारतसावित्री-ग्रन्थरत्नमें स्वयं भगवान्ने अपने श्रामुखसे शूद्रकी व्याख्या करते हुए कहा कि भगवद्भक्तकी कोई जाति नहीं होती। वह कभी शूद्र नहीं कहलाता। साथ ही इसमें शिष्टता और शालीनतासे चरित्र निर्माण-सम्बन्धी तत्व संक्षेपमें इस प्रकार रखे गये हैं जिससे आजका जगत् बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है।

आदरणीय परमसन्त एवं भारतके प्रसिद्ध दार्शनिक पण्डितराज डा० श्री गोपालशास्त्री 'दर्शन केशरी' जीने इस ग्रन्थको लोकोपकारकी इच्छासे अति

सरल हिन्दो टीकाके साथ जगत्को समर्पित किया है। जनमानसमें यदि इस ग्रन्थका सही ढंगसे प्रचार एवं प्रसार हो तो आत्मबोधके इच्छुक साधकोंके लिए साधनपथमें बढ़ने हेतु यह एक सहायकके रूपमें सिद्ध हो सकता है।

इसमें श्री भगवान् कृष्णचन्द्रके साथ दुर्योधन, युधिष्ठिर आदि महाभारतके पात्रोंके संवाद स्वरूपमें सम्पूर्ण उपदेश इस प्रकार निहित है, जैसे —'गागरमें सागर' भरा है। भारतीय मनीषियोंके सिद्धान्तोंका ऐसा दिव्य स्फोट आजके युगके लिए भी अति कल्याणप्रद है। इससे गीता, गंगा व गौकी शक्तिका प्रभाव एवं तात्कालिन युद्ध शास्त्रका संक्षिप्त विवेचन भी आजके अणु युगके लिए गुप्त रहस्यके रूपमें प्रगट हो गया है जिससे जगत्का बहुत बड़ा कल्याण हुआ है। इति।

श्रीमती दक्षा त्रिपाठी
अध्यक्षा गोपालकृष्ण आश्रम

"संक्षिप्त महाभारत"

सुग्रहीतनामधेय पूज्य श्री गोपाल शास्त्रीजी दर्शनकेशरीजी द्वारा संकलित महाभारतका लगभग ५००० पञ्चसहस्र श्लोकात्मक संक्षिप्त ग्रन्थ तैयार है। जिसमें सम्पूर्ण अठारहों पर्वोंकी कथा अविकल रूपसे चलती है। साथ ही सरल राष्ट्रभाषा हिन्दीमें नीचे अनुवाद भी किया गया है। सम्पूर्ण महाभारत न पढ़ सकनेवाले महाभारत प्रेमियोंके लिये ही यह उपयोगी नहीं बल्कि हम तो कहेंगे--

'संक्षिप्तं यदि नायाति वृथा पूर्णे परिश्रमः।'

महाभारतके विषयमें ऐसा ग्रन्थ 'न भूतो न भविष्यति' ही है। प्रभुने चाहा तो शीघ्र ही आपकी सेवामें प्रस्तुत किया जायेगा। इसके शीघ्र प्रकाशनके लिए प्रकाशकों, सहयोगदाताओंका स्वागत है। इसके अतिरिक्त पूज्य श्रीशास्त्रीजीके लगभग डेढ़ दर्जन अन्य भी ग्रन्थ अप्रकाशित हैं जिनके लिए सहयोग अपेक्षित है। ॥ इति शम् ॥

—विदुषामाश्रवः सन्तरामशरणदासः
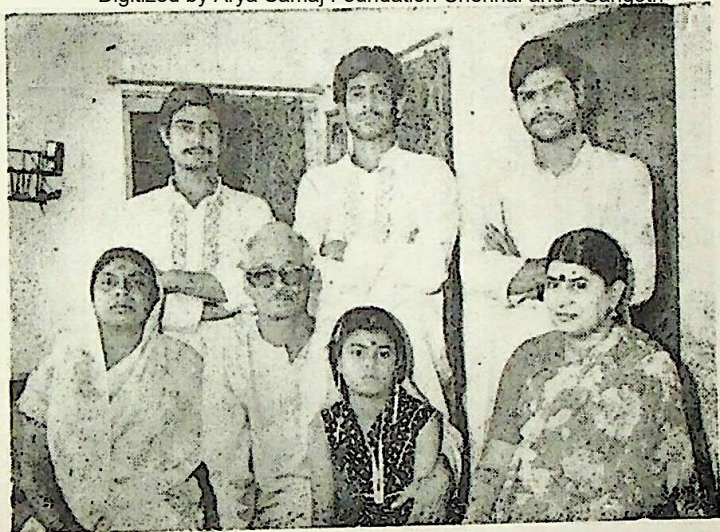
पूज्य श्री शास्त्री जी के ज्येष्ठ एवम् कनिष्ठ पुत्रद्वय अपने परिवार के साथ
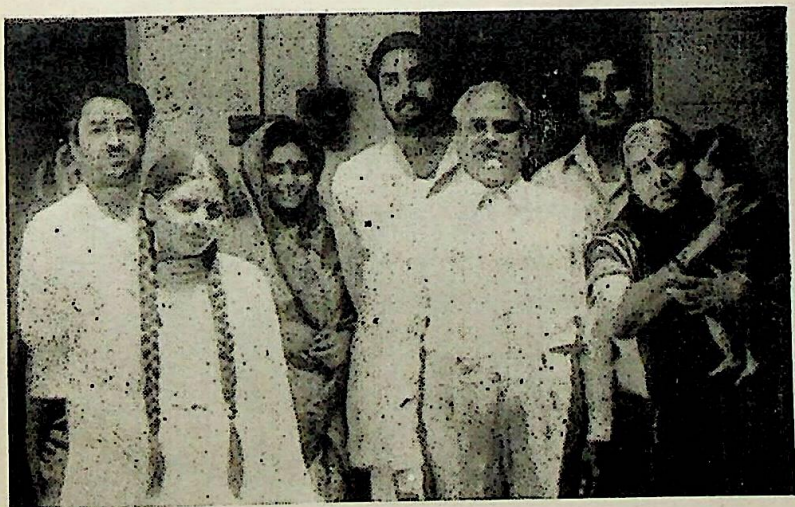
❀ श्रीकृष्णः शरणं मम ❀

भूमिका

अये विपश्चिदपश्चिमाः कर्णयोः कुरुत किञ्चिदाकर्णनीयम्। इदं हि भारतसावित्री-नामकं स्तोत्ररत्नं बहोः कालात् किल पठन-पाठन-स्तवन-कार्येषु व्यापृतं विद्यते। कुत्रचन प्रमाणित-शास्त्रजिघृक्षुभिः प्रमाणितमप्यस्ति।

यथा—विद्यानिधि-श्रीसिद्धेश्वरशास्त्रि-चित्रावकृतः भारतीय-प्राचीन-चरित्रकोशः। विद्वत्-कुल-कैरव-बन्धु-चिन्तामणि-विनायक-वैद्यकृताश्च महाभारत-मीमांसा सम्बन्धिनो ग्रन्था द्रष्टव्याः।

अस्मिन् स्तोत्रे महाभारतरत्नस्य साररहस्यं निर्गलितं पिण्डीभूतं प्रकामं दृग्गोचरी भवति। एतस्य पाठः सश्रद्धं कृतश्चेत् सम्पूर्ण-महाभारतपाठ-फलम् ददाति। उक्तं व्यासदेवेनैव—

गवां शतं कनकशृङ्गमयं ददाति
विप्राय वेदविदुषे च बहुश्रुताय।
[1]पुण्यां च भारतकथां पठति प्रभाते
तुल्यं फलं भवति तस्य च तस्य चैव॥

सम्राजो भर्तृहरेः वचनं स्मरणीयम्—

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये,
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये।
तेऽमी मानुष-राक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये,
ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे॥

॥ इति शिवम् ॥

१. 'पुण्यां भारतकथाम् इति पदाभ्यां भारत-सावित्री' गृह्यते।

॥ श्री कृष्ण हमारे रक्षक हैं ॥

हे अद्वितीय विद्वानों ! सुनने योग्य बातें सुनिये ! यह भारत सावित्री नामक स्तोत्ररत्न बहुत दिनोंसे पठन-पाठन स्तवन (स्तुति) के कार्योंमें संसक्त रहता आ रहा है। कहीं कुछ प्रमाणित शास्त्रको ही लोग चाहते हैं। उनके लिये इसमें प्रमाण भी प्रस्तुत हैं। विद्यानिधि सिद्धेश्वर शास्त्री चित्रावकृत प्राचीन चरित्र-कोश है तथा विद्वत्कुल-कैरवबन्धु चिन्तामणि विनायक वैद्यकी महाभारत मीमांसा सम्बन्धी ग्रन्थ है। उन दोनोंने भारत सावित्रीको महाभारतका निष्कर्ष सिद्ध किया है।

अखिल पर्वोका निष्कर्ष सार रहस्य इस स्तोत्ररत्नमें भरा पड़ा है। सारे महाभारतका नवनीत (मक्खन) यह भारत सावित्री स्तोत्र है। श्रद्धापूर्वक इसका पाठ महाभारत पाठका फल देता है। स्वयं व्यासदेवोऽपि वक्ति व्यास जी कहते हैं—

गवां शतं कनकशृङ्गमयं ददाति, विप्राय वेदविदुषे च बहुश्रुताय।
पुण्यं च भारत-कथां पठति प्रभाते; तुल्यं फलं भवति तस्य च तस्य चैव ॥

खुद व्यासजीने कहा है कि जो सोनेके सिंघासन पर सोलह तोले सोनेके सीङ्ग बनाकर, गायके पहनाकर चांदीके पत्तर पीठ पर धरकर पीली रेशमी चादर ओढ़ाकर वेदज्ञ बहुश्रुत विद्वानको ऐसी एक सौ एक (१०१) गायोंका दान करे। उसका पुण्य और इस भारत सावित्रीका पाठ श्रद्धापूर्वक कर लेता है; दोनोंका फल बराबर तुल्य, ही होता है। यहां पर यह निम्न भारत-सम्राट राजा भर्तृहरिका श्लोक याद कर ही लेना है—'एक सत् पुरुष ऐसे होते है जो अपने स्वार्थको त्यागकर परोपकार किया करते हैं। दूसरे, सामान्य पुरुष, वे हैं जो उतना ही परोपकार करते हैं, जितनेसे अपना स्वार्थ न बिगड़े। किन्तु वे मनुष्य तो राक्षस है जो अपने स्वार्थके लिये दूसरेके हितको नष्ट कर देते हैं। परन्तु जो निरर्थक ही दूसरेके हितको बिगाड़ते हैं, ऐसेको मैं नहीं जानता।" यह पद्य आज सभीको याद रखना है। इति शिवम्।

पण्डितराज डॉ श्री गोपालशास्त्री (दर्शन केशरी)
डी० ५९/३१ सिगरा, वाराणसी।
दूरभाष—६५९९५।

॥ श्रीभारती जयतुतराम् ॥

भारतसावित्री

व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम् ।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम् ॥ १ ॥

वशिष्ठ जीके प्रपौत्र शक्ति स्वामीके पौत्र पराशर ऋषिके पुत्र श्री शुकदेव जीके पिता निष्पाप तपोनिधि व्यास जीको नमस्कार है। १।

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे ।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः ॥ २ ॥

साक्षात् भगवान् विष्णु ही व्यास जो हैं चाहे व्यास जोको ही विष्णु कहे, ब्रह्मनिधि (वेदके खजाने) वशिष्ठ जीके वंशमें उत्पन्न व्यास जीको नमस्कार है। २।

अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुरपरो हरिः ।
अभाललोचनः शम्भुर्भगवान् बादरायणः ॥ ३ ॥

यद्यपि जिनके चार मुख नहीं है ऐसा ब्रह्मा, दो बाहू वाले दूसरे विष्णु, व ललाटमें नेत्र-शून्य शिवजो ही व्यास जी हैं। वे भगवान् हैं। बदरोवन निवासी हैं। ३।

मुनिं स्निग्धाम्बुजाभासं वेदव्यासमकल्मषम् ।
वेदव्यासं सरस्वत्यावासं व्यासं नमाम्यहम् ॥ ४ ॥

जो मुनि (मननशील) है। जो चिकने नील कमल की आभा वाले है। वेदका विभाग जिन्होंने किया है। सरस्वती नदी पर हो जिनका आवास है। ऐसे व्यासजीको नमस्कार है। ४।

सञ्जय उवाच

द्वारावत्यां स्थितं कृष्णं चिन्तयामास वै पुरा ।
संध्यर्थं प्रेषयामास कुरूणां पाण्डवैः सह ॥ ५ ॥

संजय बोले—पूर्वकालमें सम्राट युधिष्ठिरने द्वारिकामें स्थित भगवान् कृष्णको याद किया और कौरवोंके साथ पाण्डवोंकी सन्धि करानेके लिये दिल्लीमें भेजा । ५ ।

पाण्डवानां हितार्थाय शीघ्रं कृष्णेन गम्यताम् ।
श्रीकृष्णो रथवेगेन गत्वा वै हस्तिनापुरीम् ॥ ६ ॥

हे भगवन् पाण्डवोंको हित करनेकी इच्छासे शीघ्र ही जाइये । भगवान् कृष्णजी भी वेगवाले रथसे हस्तिनापुर (दिल्ली) पहुंचकर विदुर जीके घर पर निवास किया । ६ ।

विदुरस्य गृहं गत्वा दृष्टस्तेन जनार्दनः ।
विदुरश्चागतं दृष्ट्वा इदं वचनमब्रवीत् ॥ ७ ॥

जब अपने घर बैठे विदुरजीने जनार्दन भगवान्को देखा तो ऐसी बात कही । ७ ।

विदुर उवाच

भवद्दर्शनमात्रेण कृतकृत्योऽस्म्यहं प्रभो ।
अद्य मे सफलं जन्म अद्य मे सफलं तपः ।
अद्य मे पितरस्तुष्टा गोविन्दे गृहमागते ॥ ८ ॥

विदुर जी बोले—भगवन् ! आपके दर्शनसे, हे प्रभो ! मैं कृतार्थ हो गया हूं । आज मेरा जन्म सफल हो गया है । आज मेरी तपस्या सफल हो गयी है । आज भगवान्के मेरे घर पर पधारनेसे हमारे पित्तर लोग सन्मुख हो गये हैं । ८ ।

वसन्ततिलका—

अद्याष्टमी च नवमी च चतुर्दशी च,
अद्यायनं च विषुवं च दिनत्रयं च ।

अद्यैव पिण्डपितृयज्ञमखस्य कालो,
दामोदरेण सहसा गृहमागतेन ॥ ९ ॥

अहो ! मैं धन्य हूं । आज मेरे घर पर अष्टमी-अमावस्या-दर्शमी चतुर्दशी १४ ही नहीं, आज उत्तरायण भी आ गया । विषुव, मेष संक्रान्ति भी हो गयी है । आज पितृ-श्राद्ध कर पवित्र पिण्डदान काल उपस्थित हो गया । जब दामोदर भगवान् हमारे घर एकाएक उपस्थित हो गये हैं । ९ ।

श्रीभगवानुवाच

साधु साधु महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।
तुष्टोऽस्मि च वरं ब्रूहि दास्यामि कुरुनन्दन ॥ १० ॥

भगवान् बोले—हे सर्वशास्त्र विशारद विदुर चाचा ! ठीक कह रहे हो, ठीक कह रहे हो । हे कुरुवंश दीपक ! मैं सन्तुष्ट हूं, वर मांग लो, मैं दूंगा । १० ।

विदुर उवाच

भोजनं विप्रसंकीर्णं बन्धुसंकीर्ण - मन्दिरम् ।
शयनं सुत-संकीर्णं देहि मे मधुसूदन ॥ ११ ॥

विदुर जी बोले—हे भगवन् ! हमारा घर बन्धुओंसे भरा रहे । हमारा भोजन स्थान ब्राह्मण वर्गसे भरा रहे । हमारी शयनको पलङ्गरी पुत्र-पुत्रियोंसे भरी हो । यही हमें वर दें । ११ ।

संजय उवाच

कृष्णस्यागमनं श्रुत्वा राजराजः सुयोधनः ।
विदुरस्य गृहं गत्वा इदं वचनमब्रवीत् ॥ १२ ॥

संजय बोले—राजा धृतराष्ट्रके कारण राजा बने हुए दुर्योधनने भगवान् श्रीकृष्णका आगमन सुनकर विदुर जीके घर जाकर यह बात कही । १२ ।

दुर्योधन उवाच

भीष्मद्रोणौ परित्यज्य मां चैव मधुसूदन।
किमर्थं पुण्डरीकाक्ष! कृतं वृषलभोजनम्॥ १३॥

दुर्योधन बोले—हे मधुसूदन! भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य जी तथा मुझ (सम्बन्धी) को भी छोड़—हे पुण्डरीकाक्ष (कमल नेत्र)! शूद्र भोजन आपने क्यों किया? । १३ ।

श्रीभगवानुवाच

न शूद्रा भगवद्भक्ता विप्रा भागवताः स्मृताः।
सर्व-वर्णेषु ते शूद्रा ये ह्यभक्ता जनार्दने॥ १४॥

भगवान् बोले—भगवद्भक्त शूद्र नहीं कहाते। वे तो भगवत् सम्बन्धसे भागवत हो जाते हैं। सभी वर्णोंमें जो भगवान्का भक्त नहीं होता, वही शूद्र है। १४।

शुद्धं भागवतस्यान्नं शुद्धं भागीरथी जलम्।
शुद्धं विष्णुपदं दिव्यं शुद्धमेकादशीव्रतम्॥ १५॥

भगवद्भक्तका अन्न शुद्ध है। गङ्गाजीका जल शुद्ध होता है। भगवान्का पैर रूप आकाश शुद्ध रहता है। एकादशी व्रत पुण्य ही माना गया है। १५।

चाण्डालं मम भक्तं वा नावमन्येत बुद्धिमान्।
योऽवमन्येत मूढात्मा रौरवं नरकं व्रजेत्॥ १६॥

मेरे भक्त चाण्डालको बुद्धिमान पुरुष अपमानित नहीं करते। जो मूर्ख इनका अपमान करता है। वह रौरव (रोवाने वाले) नरकमें गिरता है। १६।

कस्य दोषः कुले नास्ति व्याधिना को न पीडितः।
व्यसनं केन संप्राप्तं कस्य सौख्यं निरन्तरम्॥ १७॥

किसके कुलमें दोष नहीं होता, किसे व्याधि नहीं सताती? विपत्ति किसे नहीं प्राप्त हुई, कौन निरन्तर सुखी ही रहता है। १७।

भोजनं पृच्छसे राजन्नादरं किं न पृच्छसि।
भोजनं गतजीर्णं स्यादादरस्त्वजरामरः ॥ १८ ॥

राजन् दुर्योधन ! भोजन तो पूछते हो, आदर क्यों नहीं पूछते ! भोजन तो पचकर निकल जाता है। आदर तो अजर अमर है। १८।

आदरेणोपनीतानि शाकान्नानि सुयोधन !
प्रीणन्ति मम गात्राणि नामृतं मान-वर्जितम् ॥ १९ ॥

अहो दुर्योधन ! आदरसे शाक भी मेरे गात्रोंको तृप्त करते हैं। मानशून्य अमृत भी मुझे नहीं सुहाता है। १९।

संप्रीतिभोज्यान्यन्नानि आपद्भोज्यानि वा पुनः।
न च संप्रीयसे राजन्न वै चापद्गता वयम् ॥ २० ॥

देखो, विपत्तिमें या प्रेमसे दूसरेका अन्न खाया जाता है। प्रेम तुम करते नहीं, न हीं हूँ मैं विपत्तिमें। २०।

द्विषदन्नं न भोक्तव्यं द्विषन्तं नैव भोजयेत्।
पाण्डवान् द्वेष्टि भो राजन् ! मम प्राणा हि पाण्डवाः ॥२१॥

शत्रुका अन्न नहीं खाना चाहिये, द्वेषीको खिलाना भी नहीं चाहिये (राजन्) आप पाण्डवोंसे द्वेष करते हो, जबकि पाण्डव मेरे प्राण हैं। २१।

मम वाक्यं कुरुश्रेष्ठ शान्तिमिच्छ सुयोधन।
राज्यं तेषां समं दत्त्वा यूयं पञ्चोत्तरं शतम् ॥ २२ ॥

हे सुयोधन ! मेरा वाक्य तुम्हारा कल्याण करेगा सुल्ह कर लो। हे कुरुओंमें श्रेष्ठ ! उनको आधा राज्य देकर आप १०५ एक सौ पांच बन जाते हैं। २२।

गोत्रक्षयो न कर्तव्यो राज्ञा बन्धुजनैः सह।
करोमि ते हितं वाक्यं मम बोधं विबोधय ॥ २३ ॥

राजाओंको अपना गोत्रका क्षय नहीं करना चाहिये। बन्धुके साथ विरोधसे गोत्रका क्षय होता है। मैं आपका हित कर रहा हूं। मेरी बात समझें। २३।

वने द्वादश वर्षाणि अज्ञातं च त्रयोदशम् ।
पञ्च ग्रामार्थिनो राजन् पाण्डवा धर्मचारिणः ॥ २४ ॥

देखो, उन्होंने बारह वर्षका वनमें अज्ञातवास व १३ तेरहवाँ गुप्तवास भी विता लिया है। धर्म मार्ग पर चलने वाले पांडव पाँच गांव पर भी राजी है । २४ ।

दुर्योधन उवाच

न यन्त्रागुणदोषोऽस्ति यन्त्रिणः पुरुषोत्तम ।
अहं यन्त्रो भवान् यन्त्री मम दोषो न विद्यते ॥ २५ ॥

दुर्योधन बोले—हे पुरुषोत्तम ! जो यन्त्री होते हैं, उन्हींको दोष-गुण लगता है । यन्त्रको नहीं। मैं यन्त्र हूँ, आप यन्त्री हैं । मेरा दोष नहीं है ।२५।

श्रीभगवानुवाच

इन्द्रप्रस्थं यमप्रस्थमवन्तीं वारुणापुरीम् ।
देहि मे चतुरो ग्रामान् पञ्चमं हस्तिनापुरम् ॥ २६ ॥

भगवान् बोले, इन्द्रप्रस्थ, यमप्रस्थ अवन्ती (उज्जैन) वरुणापुरी, यही चार गांव दें पांचवाँ हस्तिनापुर दे दें । २६ ।

दुर्योधन उवाच

इन्द्रप्रस्थं गुरोर्दत्तं यमप्रस्थं कृपस्य च ।
वारुणावतकं भीष्मे अवन्ती सूर्यनन्दने ॥ २७ ॥

दुर्योधन बोले—इन्द्रप्रस्थ तो गुरुजीको दे दिया है और यमप्रस्थ कृपाचार्यको, वारुणावतको भीष्मके लिए व अवन्ति (उज्जैन) कर्णको । २७ ।

हस्तिनं पुरमस्माकं पञ्च ग्रामाननुक्रमात् ।
एवं व्यवस्थितान् ग्रामान् शृणु देवकिनन्दन ॥ २८ ॥

तथा हस्तिनापुर तो हमारा ही है कैसे दें । यों पांचो गांव क्रमसे भर गये हैं । हे देवकीनन्दन ! ये गांव इस प्रकार दे दिये गये है, सुन लीजिये । २८ ।

सूच्यग्रेण सुतीक्ष्णेन यावद्भिद्यति मेदिनी।
तावन्नहि प्रदास्यामि विना युद्धेन केशव ॥ २९ ॥

हे केशव ! सुईके नोकसे जितनी पृथ्वी छिदती है उतनी भूमि भी युद्धके बिना नहीं दूंगा। २९।

श्रीभगवानुवाच

द्वाविमौ पुरुषौ मूर्खौ दुर्योधनदशाननौ।
गोग्रहं वनभङ्गं च दृष्ट्वा युद्धं पुनः पुनः ॥ ३० ॥

श्री भगवान् बोले—लोकमें दो ही पुरुष मूर्ख हैं। प्रथम दशानन, दूसरा दुर्योधन। जो वनभङ्ग होने तथा गोव्रजके युद्धमें परास्त होने पर भी बारम्बार युद्धकी चर्चा करते हैं। ३०।

वंशस्थम्—

यदा यदा पश्यसि वानरध्वजं
धनुर्धरं पाण्डवमध्यमं रणे।
गदाप्रहारं बलिनं वृकोदरं
तदा तदा दास्यसि सर्वमेदिनीम् ॥ ३१ ॥

हे दुर्योधन ! जब हनुमत्-ध्वज वाले मध्यम पाण्डव गाण्डीव धनुष वाले अर्जुन तथा बली गदाधारी वृकोदर भीमको रणमें देखोगे तब-तब सारी पृथ्वी दे डालोगे। ३१।

यदा यदा द्रोणविकर्णकर्णैः
संक्षिप्तगात्रे खलु भीष्मशल्यौ।
कृपश्च योधाः पतिता रणाङ्गणे
तदा तदा दास्यसि सर्वमेदिनीम् ॥ ३२ ॥

जब-जब द्रोणाचार्य विकर्ण-कर्णके साथ भीष्म और राजा शल्यको रणमें संक्षिप्त-गात्र होने पर (गिर जानेपर) और कृपाचार्य इत्यादि सेनानी योधाओं को रणमें गिरे देखोगे, तब-तब सारी पृथ्वी दे डालोगे। ३२।

दुर्योधन उवाच

हिरण्यवर्णं परिपूर्णगात्रं
मेघोन्नतं मत्तगजेन्द्रतुल्यम् ।
आदित्यपुत्रं बहुशत्रुनाशं
पश्यामि कर्णं रथमारुहन्तम् ॥ ३३ ॥

दुर्योधन बोले— हे पुरुषोत्तम ! मैं तो सोनेके समान चमकने वाले जवानी खिले गठीले अङ्ग वाले मेघके समान उमड़े हुए, मतवाले हाथीके समान झूमने वाले, बहुत शत्रुओंको नाश कर डालने वाले, रथ पर चढ़ते हुए कर्णको देख रहा हूँ । ३३ ।

श्री भगवानुवाच

नरे चतुष्कं तुरगे च षोडशं
गजे शतं पञ्चशतं रथेषु ।
दृष्ट्वाऽर्जुनो मुञ्चति बाणवर्षं
स्वातीगतः शुक्र इवातिवृष्टिम् ॥ ३४ ॥

श्री भगवान् बोले - स्वाती नक्षत्र पर शुक्रके जाने पर अतिवृष्टिके समान मनुष्योंमें ४, घोड़ोंमें १६, हाथियोंमें १००, रथोंमें ५०० को देखकर अर्जुन एकबार बाणवृष्टि करता है । ३४ ।

एकधा दशधा चैव शतधा च सहस्रधा ।
रणे पार्थशरा-वृष्टि दीनं ब्रह्मविदो यथा ॥ ३५ ॥

जैसे ब्रह्मज्ञानीके लिये दान देनेकी इयत्ता नहीं होती वैसे ही एक बार १० बार १०० बार १००० बार अर्जुनके बाण एक साथ चलते है । ३५ ।

किं कर्णेन सहस्रेण दुर्योधनशतैरपि ।
शरद्गर्जितमेघेन वृथा कर्णेन गर्जितम् ॥ ३६ ॥

उसके सामने हजार कर्ण व्यर्थ है, सौ दुर्योधन व्यर्थ है । शरद ऋतु में मेघ गर्जनके समान कर्णका गर्जन व्यर्थ है । ३६ ।

एकाकी पादचारेण यदि नायासि कौरव।
धर्मशास्त्रप्रवक्तारो मन्वाद्या मद्यपायिनः ॥ ३७ ॥

अये कौरव अकेला पैरसे चलकर यदि तुम पृथ्वी पर कहीं घुमो और उस दुर्दशामें मेरे पास न आओ तो मैं धर्मशास्त्र वालोंको मद्यपी कहूंगा। ३७।

धृतराष्ट्र उवाच

ब्रूहि संजय यद्वृत्तं युद्धे तेषां महात्मनाम्।
पाण्डवानां कुरूणां च संप्रवृत्ते महाक्षये॥ ३८॥

धृतराष्ट्र बोले—हे संजय! बोलो, संग्राममें जहां उन महात्माओं पाण्डवों और कौरवोंके बीच महाक्षय हो रहा था। किसका क्या हुआ?। ३८।

के तत्र प्रमुखा योधाः के च तत्र महारथाः।
महाबलाश्च के तत्र कथं ते विनिपातिताः॥ ३९ ॥

कौन वहां प्रमुख सेनानी थे? और कौन महारथी थे? महाबली कौन थे? और कैसे वे मारे गये?। ३९।

भीष्मद्रोणौ कथं भग्नौ कर्णशल्यौ कथं हतौ।
कथं दुर्योधनो राजा भीमसेनेन पातितः॥ ४० ॥

भीष्म और द्रोणाचार्य कैसे गिरे? कर्ण और शल्य कैसे मारे गये? राजा दुर्योधन भीमसेनसे कैसे गिराया गया। ४०।

संजय उवाच

मेदिनीभारनिर्हारं पार्थसारथिमच्युतम्।
प्रणमामि हृषीकेशं दुर्लभं चक्रपाणिनम्॥ ४१ ॥

संजय बोले पृथ्वीके भार उतारने वाले अर्जुनके सारथी अच्युत, अपने संकल्पसे च्युत न होने वाले इन्द्रियजीत दुर्लभ सुदर्शनधारी भगवान् श्रीकृष्णको प्रणाम करता हूं। ४१।

दुर्लभा विप्रगोष्ठी च दुर्लभा भारती कथा ।
दुर्लभा हरिभक्तिश्च गङ्गास्नानं च दुर्लभम् ।। ४२ ।।

ब्राह्मण सभा, यह भारतसावित्री कथा, भगवान्‌की भक्ति और गङ्गास्नान चार वस्तुवें इस लोकमें दुर्लभ है । ४२ ।

सद्भिश्च सहवासेन जाह्नव्या दर्शनेन च ।
विष्णोः स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ।। ४३ ।।

सज्जनोंके साथ रहनेसे गङ्गाजीके दर्शनसे व भगवान्‌के स्मरण मात्रसे मनुष्य सभी पापोंसे मुक्त हो जाते हैं । ४३ ।

अर्जुनः सात्यकिश्चैव धृष्टद्युम्नो घटोत्कचः ।
शिखण्डिश्चाभिमन्युश्च वायुपुत्रो महाबलः ।। ४४ ।।

अर्जुन, सात्यकि, धृष्टद्युम्न, घटोत्कच, शिखण्डी, अभिमन्यु, और वायुपुत्र-भीमसेन ये सात महावली कहे जाते है । ४४ ।

नकुलः सहदेवश्च धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
विराटश्चोत्तरश्चैव द्रुपदश्च महारथः ।। ४५ ।।

नकुल, सहदेव, धर्मराज युधिष्ठिर, राजा विराट, अभिमन्युके साले उत्तर और राजा द्रुपद; ये छः महारथी कहाते हैं । ४५ ।

पाण्डवानां बले योधाः सर्वे विष्णुपराक्रमाः ।
कौरवाणां बले योधाः सर्वे संकर्षणप्रभाः ।। ४६ ।।

पाण्डवपक्षमें विष्णु पराक्रमी योधा हैं । कौरवपक्षमें बलराम प्रकाशी योधा हैं । यही भेद है । ४६ ।

शकुनिः सौबलो भीष्मः कृतवर्मा जयद्रथः ।
भूरिश्रवाश्च बाह्लीको भगदत्तस्तथैव च ।। ४७ ।।
उलूकः सोमदत्तश्च शशिबिन्दुश्च पार्थिवः ।
द्रोणः द्रौणिः कृपः शल्यो वृषसेनो हलायुधः ।। ४८ ।।

वैकर्तनो विकर्णश्च कलिङ्गस्तु तथैव च।
दुःशासनश्च कर्णश्च राजा दुर्योधनस्तथा ॥ ४९ ॥

एते द्वाविंशतिः प्रोक्ता भारतेषु महारथाः।
कौरवाः पाण्डवाश्चैव एते युद्ध-विशारदाः ॥ ५० ॥

शकुनि (सुबलपुत्र) भीष्म कृतवर्मा, जयद्रथ, भूरिश्रवा, वाह्लीक भगदत्त, उलूक, सोमदत्त, शशिविन्दु (राजा) द्रोणाचार्य, उनका पुत्र अश्वत्थामा, कृपाचार्य, राजा शल्य, वृषसेन (कर्णपुत्र) हलायुध, वैकर्तन, विकर्ण, कलिङ्ग (उत्कलराज) दुःशासन, कर्ण, राजा दुर्योधन, ये २२ राजा भारतवंशियोंमें महारथी कहाते हैं। कौरव और पाण्डवोंमें; ये लोग प्रवीण कहे जाते हैं। ४७–५०।

भीष्म उवाच

अर्जुनः सह पुत्रेण द्रोणः सह सुतेन च।
अहं भूरिश्रवाश्चैव षडेतेऽतिरथाः स्मृताः ॥ ५१ ॥

भीष्म बोले—अभिमन्यु पुत्रके साथ अर्जुन, द्रोणाचार्य भी अश्वत्थामाके साथ, मैं भीष्म और भूरिश्रवा ये ही छः अतिरथ हैं। ५१।

कृपश्च कृतवर्मा च भद्रराजो युधिष्ठरः।
विराटो भीमसेनश्च षडेते च महारथाः ॥ ५२ ॥

कृपाचार्य, कृतवर्मा, भद्रराजशल्य उनका भागिनेय युधिष्ठिर, राजाविराठ, भीमसेन ये छः महारथी हैं। ५२।

सात्यकिश्च शिखण्डिश्च धृष्टद्युम्नो विराटजः।
शकुनी राजपुत्रश्च एते समरथाः स्मृताः ॥ ५३ ॥

सात्यकि, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, विराटका, लड़का राजपुत्र और शकुनि ये ६ समरथी कहे जाते हैं। ५३।

दुःशासनश्च कर्णश्च वृषसेनोऽपि सैन्धवः।
नकुलः सहदेवश्च षडेतेऽर्धरथाः स्मृताः ॥ ५४ ॥

दुःशासन, कर्ण, वृषसेन, सिन्धु देशका राजा जयद्रथ, नकुल, सहदेव, ये छवो अर्धरथी कहे जाते हैं। ५४।

एकेनाहं त्रिभि र्द्रोणः पञ्चभिः सूर्यनन्दनः।
निमेषं द्रोणपुत्रस्तु निमिषार्धं धनञ्जयः ॥ ५५ ॥

मैं एक क्षणमें, द्रोण तीन क्षणमें, कर्ण पांच क्षणमें और द्रोणपुत्र अस्वत्थामा एक निमेषमें और अर्जुन आधा क्षणमें लक्ष वेधते हैं। ५५।

चतुर्विंशतिरेते वै वीरा भारतसत्तमाः।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥ ५६ ॥

ये चौबीस वीर भारतमें सर्वश्रेष्ठ है। नाना शस्त्रोंसे प्रहार करने वाले हैं। सभी युद्धमें प्रवीण हैं। ५६।

आदिपर्वं सभापर्वं पर्वं आरण्यकं तथा।
विराटपर्वं विज्ञेयं चतुर्थं तदनन्तरम् ॥ ५७ ॥

पर्व सूची--१— आदि पर्व २— सभा पर्व ३— आरण्य पर्व ४—विराट पर्व। ५७।

उद्योगं पञ्चमं पर्वं भीष्मपर्वमतः परम्।
सप्तमं द्रोणपर्वं स्यात् कर्णपर्वमथाष्टकम् ॥ ५८ ॥

५- उद्योग पर्व ६—भीष्म पर्व ७ - द्रोणपर्व ८— कर्ण पर्व। ५८।

नवमं शल्यपर्वं स्यात् गदापर्वमतः परम्।
सौषुप्तिकं तदा पर्वं गर्भपातनमेव च ॥ ५९ ॥

९— शल्य पर्व १०— गदा पर्व ११— सौषुप्तिक पर्व १२— गर्भपात पर्व। ५९।

त्रयोदशं तु स्त्रीपर्व प्रदानमुदकस्य च।
शान्तिपर्वमतः प्रोक्तमाश्वमेधिकमेव च॥ ६० ॥

१३—स्त्री पर्व १४—शान्ति पर्व १५—अश्वमेध पर्व । ६० ।

स्वर्गारोहणपर्वं स्यात् हरिवंशस्तथैव च।
इत्यष्टादश पर्वाणि संख्या द्वैपायनेन तु॥ ६१ ॥

१६— शान्ति पर्व १७—हरिवंश पर्व १८—स्वर्गारोहण पर्व । ये अठारह पर्व व्यासजीने गिनाये हैं। ६१ ।

भाति सर्वेषु वेदेषु रतिः सर्वेषु जन्तुषु।
तरणं सर्व-पापानां यस्माद्भारतमुच्यते॥ ६२ ॥

भारत शब्दके तीनों अक्षरोंका अर्थ

'भा' सब वेदोंमें भासता है, 'र' सब जन्तुओंसे प्रेम करता है, 'त' सब पापोंको तर जाता है। इसलिये भारत कहा जाता है। ६२।

भारतस्य समुद्रस्य मेरोर्नारायणस्य च।
अप्रमेयाणि चत्वारि पुण्यं तोयं गुहा गुणाः॥ ६३ ॥

भारतका पुण्य समुद्रका जल मेरु पर्वतका गुफा और नारायण भगवानके गुण ये चारों अप्रमेय हैं। ६३।

हेमन्ते प्रथमे मासे शुक्लपक्षे त्रयोदशी।
प्रवृत्तं भारतं युद्धं नक्षत्रं यमदैवतम्॥ ६४ ॥

हेमन्त ऋतुमें पहला माह मार्गशीर्षके शुक्ल पक्षमें त्रयोदशीके दिन भारत युद्ध प्रारम्भ हुआ। तथा नक्षत्र भरणी थी। ६४।

फाल्गुन्यां निहतो भीष्मः कृष्णपक्षे च सप्तमी।
अष्टम्यां चैव सौभद्रो नवम्यां च जयद्रथः॥ ६५ ॥

कृष्ण पक्षके सप्तमी फाल्गुनी नक्षत्रमें भीष्म निहत हुए। अष्टमीको अभिमन्यु, नवमीको जयद्रथ गिरे। ६५।

दशम्यां भगदत्तस्तु महायुद्धे निपातितः।
एकादश्यामर्धरात्रे हतो वीरो घटोत्कचः॥ ६६ ॥

दशमीको भगदत्त और एकादशीको आधी रातको वीर घटोत्कच मारा गया था। ६६।

ततः प्रभातसमये विराटद्रुपदौ हतौ।
द्वादश्यां चैव मध्याह्ने द्रोणाचार्यो रणे हतः॥ ६७ ॥

दूसरे दिन सुबह राजा विराट और द्रुपद मारे गये। द्वादशीको बारह बजे दिनमें 'द्रोणाचार्य रणमें' गिरे। ६७।

त्रयोदश्यां तु मध्याह्ने वृषसेनो निपातितः।
चतुर्दश्यां तु पूर्वाह्ने रणे दुःशासनो हतः॥ ६८ ॥

त्रयोदशीको मध्याह्नमें कर्णका लड़का वृषसेन मारा गया। चतुर्दशीको दिन पूर्वान्हमें दुःशासन रणमें मारा गया। ६८।

तस्मिन्नेव महायुद्धे वर्तमाने चतुर्दशी।
धनञ्जयेन मध्याह्ने कर्णो वैकर्तनो हतः॥ ७९ ॥

उसी महायुद्धमें जब घमासान युद्ध हो रहा था, उस समय मध्यान्हमें धनञ्जयने सूर्यपुत्र कर्णको मारा। ६९।

उपजातिः—

नि.शब्दतूर्यं हतयाधवीरं
प्रशान्तदर्पं धृतराष्ट्रसैन्यम्।
न शोभते सूर्य-सुतेन हीनं
वृन्दं गृह्णाणामिव चन्द्रहीनम्॥ ७० ॥

बाजा बन्द हो गया, सभी वीर मारे गये, दुर्योधनका गर्व समाप्त हो गया और धृतराष्ट्रके सैन्यबलका घमण्ड टूट गया। सूर्य पुत्र कर्णसे हीन सेना जैसे घरोंकी पंक्ति चन्द्रमाके बिना नहीं शोभती वैसी दुर्योधनकी सेना हो गयी। ७०।

मुखं कमलपत्राक्षं यथा श्रवणवर्जितम् ।
तथा तत् कौरवं सैन्यं कर्णहीनं न शोभते ॥ ७१ ॥

जैसे कमलके पत्रके समान नेत्र वाला मुख कानसे वर्जित होने पर नहीं शोभता है उसीप्रकार कर्णसे हीन दुर्योधनकी सेना नहीं शोभती थी । ७१ ।

मन्दाक्रान्ता—

व्यूढोरस्कं विमलवसनं तप्तहेमावभासं,
पुत्रं दृष्ट्वा भुवनतिलकं पार्थबाणावसक्तम् ।
पांसुग्रस्तं मलिनवसनं पुत्रमन्वीक्ष्य तं च,
मन्दं मन्दं मृदितवदनं मेदिनी मन्दमन्दा ॥ ७२ ॥

चौड़ी छाती वाला, रेशमी वस्त्र वाला, तपेतपाये हुए सोनेके समान शरीर वाला, संसारका एकमात्र तिलक, अर्जुनके बाण से ताडित धुलीमें पड़ा हुआ मलीन वस्त्र वाला, पुत्रको धीरे २ जिसका मुख मुरझा गया हो, ऐसी पृथ्वी, पुत्र को देखकर रो पड़ी । ७२ ।

त्वया मया च कुन्त्या च धरण्या वासवेन च ।
जामदग्न्येन रामेण षड्भिः कर्णो निपातितः ॥ ७३ ॥

मेरे द्वारा, तुम्हारे द्वारा, कुन्तीके द्वारा, पृथ्वीके द्वारा, परशुरामके द्वारा, तथा इन्द्रके द्वारा; इन छह आदमिओंके द्वारा कर्ण मारा गया । ७३ ।

अमायां धर्मपुत्रेण शल्यो मद्राधिपो हतः ।
उलूकः शकुनिश्चैव यमाभ्यां विनिपातितौ ॥ ७४ ॥

अमावस्याको धर्मपुत्र युधिष्ठिरने मद्र देशके राजा शल्यको मारा । नकुल और सहदेवसे उलूक शकुनि मारे गये । ७४ ।

अमायामर्धरात्रे तु राजा दुर्योधनो हतः ।
भीमसेनस्य गदया ताडितो विनिपातितः ॥ ७५ ॥

अमावस्याको आधी रातमें भीमकी गदासे ताडित होकर राजा दुर्योधन मारा गया । ७५ ।

अभवत्तादृशं युद्धं क्षत्रियाणां मनस्विनाम् ।
अन्यथा भाषितं युद्धं कर्मणा कृतमन्यथा ॥ ७६ ॥

मनस्वी क्षत्रियोंका वैसा युद्ध हुआ जिसका वर्णन जैसा हुआ वैसा नहीं किया जा सकता । ७६ ।

अमायामेव यामिन्यां द्रौणिना निहतस्तदा ।
धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च द्रौपद्याः पञ्च चात्मजाः ॥ ७७ ॥

अमावस्याको रात्रिमें अश्वत्थामाके द्वारा धृष्टद्युम्न (द्रुपदपुत्र) शिखण्डी और द्रौपदीके पाँच पुत्र अश्वत्थामा द्वारा मारे गये । ७७ ।

अष्टौ रथ-सहस्राणि नव दंतिशतानि च ।
राजपुत्रसहस्रं च अश्वत्थामा निवर्तते ॥ ७८ ॥

आठ हजार रथ नव सौ हाथी और एक हजार राजपुत्रोको अश्वत्थामा मार कर लौट आया था । ७८ ।

दिनानि दश भीष्मेण भारद्वाजेन पञ्च च ।
दिनद्वये तु कर्णन शल्येनार्ध-दिनं तथा ॥ ७९ ॥

भीष्मपितामहने दश दिन-युद्ध किया, द्रोणाचार्यने पांच दिन, कर्णने दो दिन, शल्यने आधा दिन । ७९ ।

दिनार्धं तु गदायुद्ध-मेतद्भारतमुच्यते ।
एवमष्टादशं हन्ति अक्षौहिण्यां दिनक्रमात् ॥ ८० ॥

और आधा दिनका गदा-युद्ध हुआ । यही महाभारत है । इस प्रकार अट्ठारह दिन अट्ठारह अक्षौहिणी सेना मारी गयी । ८० ।

धर्मक्षेत्रे क्षयक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे महात्मना ।
पार्थेनारोहयन् स्वर्गं राजपुत्रा यशस्विनः ॥ ८१ ॥

महात्मा अर्जुनने यशस्वी राजपुत्रोंको रणक्षेत्र कुरुक्षेत्रमें मारकर स्वर्ग भेज दिया । ८१ ।

नवनाग-सहस्रेषु नागे नागे शतं रथाः।
रथे रथे शतं चाश्वा अश्वे अश्वे शतं नराः ॥ ८२ ॥

नव हजार हाथी थे। एक-एक हाथीमें सौ-सौ रथी रहते थे। और एक-एक रथमें सौ-सौ घोड़े होते थे। एक-एक घोड़ेके साथ सौ-सौ सेना रहती थी। ८२।

रणयज्ञे महायज्ञे दीक्षितोऽयं युधिष्ठिरः।
वेदिं कृत्वा कुरुक्षेत्रं यूपं कृत्वा जनार्दनम् ॥ ८३ ॥

पृथ्वी पर रणयज्ञमें युधिष्ठिरने दीक्षित होकर कुरुक्षेत्रको वेदी बनाकर भगवान् कृष्णको यूप बनाकर। ८३।

होतारमर्जुनं कृत्वा यजमानो युधिष्ठिरः।
पाञ्चालीमरणिं कृत्वा वह्निं कृत्वा वृकोदरम् ॥ ८४ ॥

अर्जुनको योद्धा बनाकर अपनेको युधिष्ठिर ने यजमान बनाकर पाञ्चाली (द्रोपदी) को अरणी बनाकर बृकोदर (भीम) को अग्नि बनाकर। ८४।

आज्यं कृत्वाऽर्कतनयं जयद्रथमुखान्नृपान्।
दुर्योधनं पशुं कृत्वा भीष्मद्रौणौ महाहविः ॥ ८५ ॥

कर्णको घी बनाकर जयद्रथ आदि प्रमुख राजाओंका हवन किया। जहां दुर्योधन पशु बना था और भीष्म और द्रोण महाहवि थे। ८५।

अयाज्ञिकमिदं द्रव्यं भयमोह-विवर्जितम्।
गाण्डीवेन स्रुवेणैव हूयमानेषु राजसु ॥ ८६ ॥

गाण्डीव धनुषको स्रुवा बनाकर जहां राजाओंका हवन हो रहा था, वहां सभी द्रव्य यज्ञ सम्बन्धी नहीं थे, मनुष्य थे। ८६।

मातापितृसहस्राणि पुत्रदारशतानि च।
संसारेष्वनुभूतानि यान्ति यास्यन्ति चापरे ॥ ८७ ॥

हजारों माता-पिता और सैकड़ों स्त्री-पुत्र संसारमें सुख दुःखका अनुभव करके चले गये, जाते हैं, जायेंगे। ८७।

हर्ष-स्थानानि सहस्राणि भय-स्थान-शतानि च ।
दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पण्डितम् ॥ ८८ ॥

हजारों स्थान खुशीके, सैकड़ों स्थान भयके, मूर्खोंको प्रतिदिन होते है। पण्डितको नहीं होते है । ८८ ।

ऊर्ध्वबाहुर्विरोम्येषु न च कश्चिच्छृणोति मे ।
धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते ॥ ८९ ॥

व्यास जी कहते है कि यह मैं दोनों हाथ ऊंचा करके कहता हूं कि कोई हमारा नहीं सुनता है कि धर्मसे धन होता है और धनसे इच्छाकी पूर्ती होती है। वह धर्म क्यों नहीं करते । ८९ ।

उपजाति :—

न जातु कामान्न भयान्न लोभा-
द्धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः ।
नित्यो धर्मः सुखदुःखे त्वनित्ये
जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः ॥ ९० ॥

न कामसे न भयसे न लोभसे धर्मको छोड़ो। धर्म जो है वह नित्य है। सुख दुःख अनित्य हैं। जीव जो है वह नित्य है उसके हेतु अनित्य है। अर्थात् जीव ब्रह्म ही है मायाके कारण वह जीव हुआ है। ९० ।

इमां भारतसावित्रीं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
सप्तजन्मकृतैः पापैः स मुक्तः सुखमेधते ॥ ९१ ॥

इस भारत सावित्रीको जो प्रातः उठ करके पढ़ता है। उसके सात जन्मके पाप नष्ट हो जाते हैं और वह मनुष्य मुक्त होकरके सुखको प्राप्त करते है । ९१ ।

दिवा वा यदि वा रात्रौ वनेषु विषमेषु च ।
न भयं विद्यते किंचित् कार्यसिद्धिर्भविष्यति ॥ ९२ ॥

दिनमें या रातमें वनमें या घरमें किसी प्रकारका भय नहीं होता और इसके पाठ करनेसे सभी कार्योंको सिद्धी होती है । ९२ ।

यत्फलं गोसहस्रस्य स्वर्णेनालंकृतस्य च ।
दत्तस्य विधिना पात्रे तत्फलं लभते नरः ।। ९३ ।।

जो फल सोनेसे अलंकृत एक हजार गौके दान करनेसे प्राप्त होता है वह फल भारत सावित्रीके पाठ करनेसे मनुष्य प्राप्त करता है । ९३ ।

अहोरात्रकृतं पापं श्रवणादेव नश्यति ।
संवत्सरकृतं पापं पठनादेव नश्यति ।। ९४ ।।

दिन रात का किया हुआ पाप श्रवण मात्रसे नष्ट हो जाते है । ९४ ।

पठतां शृण्वतां चैव विष्णोर्माहात्म्यमुत्तमम् ।
दुःस्वप्ननाशनं चैव सुस्वप्नं च भविष्यति ।। ९५ ।।

भगवान् विष्णुके उत्तम माहात्म्यको पढ़ने और सुननेसे बुरे स्वप्न नष्ट होकरके अच्छे स्वप्न दिखायी देते है ।९५ ।

भारतं पञ्चमं वेदं यः पठेच्छृणुयादपि ।
स मुक्तः सर्वपापेभ्यो विष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ।। ९६ ।।

महाभारत पाचवाँ वेद है । जो पढ़ता है और सुनता है वह सभी पापोंसे मुक्त होकर विष्णु भगवान्के सानिध्यको प्राप्त होता है । ९६ ।

भारतं पाठमात्रेण शृण्वन् पापैः प्रमुच्यते ।
शृणु राजन् यथा वृत्तं तथा वक्ष्यामि ते कथाम् ।। ९७ ।।

महाभारतके एक पादका सुननेवाला सभी पापोंसे मुक्त होता है । हे राजन् ! सुनिये जैसी कथा है वैसे ही मैं कहूँगा । ९७ ।

सा कथा भारती पुण्या द्रौपदी सा पतिव्रता ।
पाण्डवानां स्नुषा धन्या, प्रसीद पुरुषोत्तम ।। ९८ ।।

वह महाभारतको कथा अत्यन्त पुण्य देने वाली है । और पतिव्रता द्रौपदी भी वैसे ही पुण्यको देने वाली है, पाण्डवोंकी वह पतोहु धन्य है । जिसके ऊपर भगवान् श्रीकृष्ण प्रसन्न हो गये । ९८ ।

वसन्ततिलका—

गवां शतं कनकशृङ्गमयं ददाति,
विप्राय वेदविदुषे च बहुश्रुताय।
पुण्यां च भारतकथां पठति प्रभाते,
तुल्यं फलं भवति तस्य च तस्य चैव ॥ ९९ ॥

सोनेके शृङ्गसे मढ़ी हुयी सौ गौवोंको अत्यन्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वानों एवं ब्राह्मणोंको देनेका जो पुण्य फल होता है। वही फल भारत सावित्रीके पढ़ने और सुननेसे प्राप्त होता है। ९९।

आदौ पाण्डवधार्तराष्ट्रजननं लाक्षागृहे दाहनं।
द्यूतं श्रीहरणं वने विहरणं मत्स्यालये वर्तनम् ॥
लीला गोग्रहणं रणे विहरणे संधिक्रियाजृम्भणं।
पश्चाद्भीष्मसुयोधनादिनिधनं ह्येतन्महाभारतम् ॥ १०० ॥

❀ इति श्रीभारत-सावित्री समाप्ता ❀

सर्वप्रथम पाण्डव और धृतराष्ट्रके पुत्रोंका जन्म हुआ। उसके बाद लाक्षागृह का दाह हुआ, जुआ खेला गया, लक्ष्मीका हरण हुआ। वनमें घुमनेके बाद मत्स्यालय निवास तथा दुर्योधनके आक्रमणके समय खेलमें ही गो व्रजके गौको ले लिया गया तथा युद्धमें जानेकी तैयारी, सन्धिकी वार्ता, तत्पश्चात् भीष्म सुयोधन आदि अच्छे-अच्छे योद्धाओंका निधन हुआ। यह इतना ही महाभारत है। १००।

विहाराभिजन काशीवास्तव्य शाण्डिल्यगोत्रः कौशल्याज क्षेमधरी पण्डित-राज डा० श्रीगोपालशास्त्री दर्शनकेशरी काशीपण्डित सभाध्यक्ष राष्ट्रपति पुरस्कृत द्वारा संगृहीत महाभारतकी संक्षिप्त पुण्या भारत सावित्री कथा सम्पूर्णा शुभं भूयात्।

भारतसावित्रीमाहात्म्यम्

भट्टिशास्त्र-समध्यायी सुधीरः पुरुषोत्तमः ।
सवृत्तिमष्टाध्यायीं तां संक्षिप्तां वाऽपि सम्पठन् ॥ १ ॥

एतदेव हि पाण्डित्य—मेतदेव सुनिर्णयः ।
एतदेव शिवाचारो जगदानन्द एव च ॥ २ ॥

पुण्या भारतसावित्री मया केशरिणाऽधुना ।
संगृहीता प्रयत्नेन श्रद्धाविश्वाससंभृता ॥ ३ ॥

तन्नित्यपाठतः पुण्यं यद्भिभारत-पाठतः ।
महाभारत-पाठेन वाऽपि तल् लभ्यते ध्रुवम् ॥ ४ ॥

रामायणी कथा पुण्या महाभारतगा तथा ।
योगवासिष्ठ-काव्येनाऽलिविलासिसुदर्शनात् ॥ ५ ॥

❀ इति सावित्रीमाहात्म्यं सम्पूर्णम् ❀
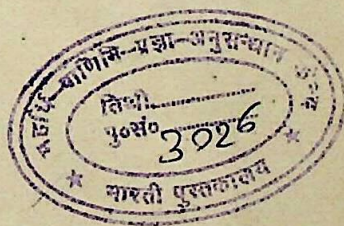
१७—बृहद् ऋजुपाणिनीयम् (व्याख्या) १०·००
१८—पाणिनीयप्रबोध व्याकरणम् (लघुसिद्धान्त कौमुदीका विकल्प) ४·५०
१९—लघुसिद्धान्त कौमुदी टीका ४·००
२०—पाणिनीय प्रदीप (हिन्दी भाषामें सरलतम संस्कृत-शिक्षण ग्रन्थ) १०·००
२१—संस्कृत शिक्षकम् (,, ,, ,, ,,) ४·००
२२—संस्कृत संस्कृति शिक्षकम् (,, ,,) २५·००
२३—गीतामृतव्याकरम् ४·००
२४—पाणिनीय प्रबोध नाटकम् (रोचक नाट्य रूपेण व्याकरण शिक्षा) ५·००
२५—पाणिनीय प्रशस्तिः (पाणिनीय व्याकरण रहस्यात्मिका) २·००
२६—पाणिनीय प्रशस्ति नाटक (हिन्दीमें पाणिनी आदि
(वैयाकरणोंका सम्मेलनात्मक) ५·००
२७—पाणिनीय नाटकम् (सस्कृत में ,, ,, ,, ,,) ५·००
२८—प्रशिक्षण संविधानम् (संस्कृत शिक्षण में क्रान्तिकारी ग्रन्थ) ४·००
२९—हिन्दी दीपिका (हिन्दी व्याकरण का अभूतपूर्व ग्रन्थ) ३·५०
३०—अलंकार-सार-मंजरी (परीक्षा पाठ्या) ३·००
३१—छन्दः प्रबन्धः (,, ,,) २·००
३२—ग्रामीण ज्योतिष शास्त्र (हिन्दी में) २·००
३३—दुर्गास्तुतिः २·००
३४—अलि-विलासी-संलाप (सर्वदर्शनात्मक संस्कृत-हिन्दी प्रथम भाग) ५·००
३५—सर्व दशन समन्वय (संस्कृत) १०·००
३६—मीमांसा परिभाषा (परीक्षा पाठ्या) ४·००
३७—भारतसावित्री (महाभारतका संक्षिप्तांश) २·००
३८—संक्षिप्त महाभारत (अद्भुत संग्रह ग्रन्थ) १०·००
३९—गाण्डीव संपादकीय लेख-माला ——
४०—पं० श्री गोपाल शास्त्री दर्शन केशरी संपूर्ण ग्रन्थ-माला ——

प्राप्ति स्थानम् :— **शास्त्री मण्डलम् तथा गोपालकृष्ण आश्रम**
डी० ५९/२१ सिगरा, वाराणसी

श्री कृष्णः शरणं मम

पण्डित श्री गोपालशास्त्री दर्शन

क्र० सं०	पुस्तकका नाम	
१—	श्रीमद् भगवद् गीताकर्मयोग भाष्यम्	
२—	भट्टि महाकाव्य "काव्य मर्मविमर्शिका" संस्कृ	
	भाग— १ सर्ग १—४	
	भाग— २ सर्ग ५—८	
	भाग— ३ सर्ग ९—१३	
	भाग— ४ सर्ग १४—२२	
	सम्पूर्ण— सर्ग १—२२	——
३—	भट्टिकाव्य शास्त्र-सार (कुञ्चिका-सोत्तरा रूपेण वा)	४·००
४—	गोमहिमाभिनय नाटकम् (संस्कृत)	५·००
५—	,, ,, (हिन्दी)	६·००
६—	वीरांगना वैभवम् (संस्कृत)	५·००
७—	,, ,, (हिन्दी)	६·००
८—	नारीजागरण नाटकम् (संस्कृत)	५·००
९—	,, ,, (हिन्दी)	४·००
१०—	भारतीय संस्कृतिः	३·००
११—	हरिजन-स्मृतिः	२·५०
१२—	हिन्दूधर्मोपदेशिका	३·००
१३—	स्वर्ण भारत; दरिद्र भारत	२·००
१४—	प्राचीन सत्यनारायण व्रत कथा	२·००
१५—	अष्टाध्यायी (पदच्छेद-वृत्ति-वार्तिक-टिप्पणी पूर्वपीठिका सहिता)	६·००
१६—	ऋजुपाणिनीयम् (संक्षिप्त अष्टाध्यायी ,, ,,)	४·००

(शेष पिछले पृष्ठ पर)